Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
February - 2019 SPECIAL ISSUE- 142

Recent Trends in Language, Literature, Social Science & Commerce

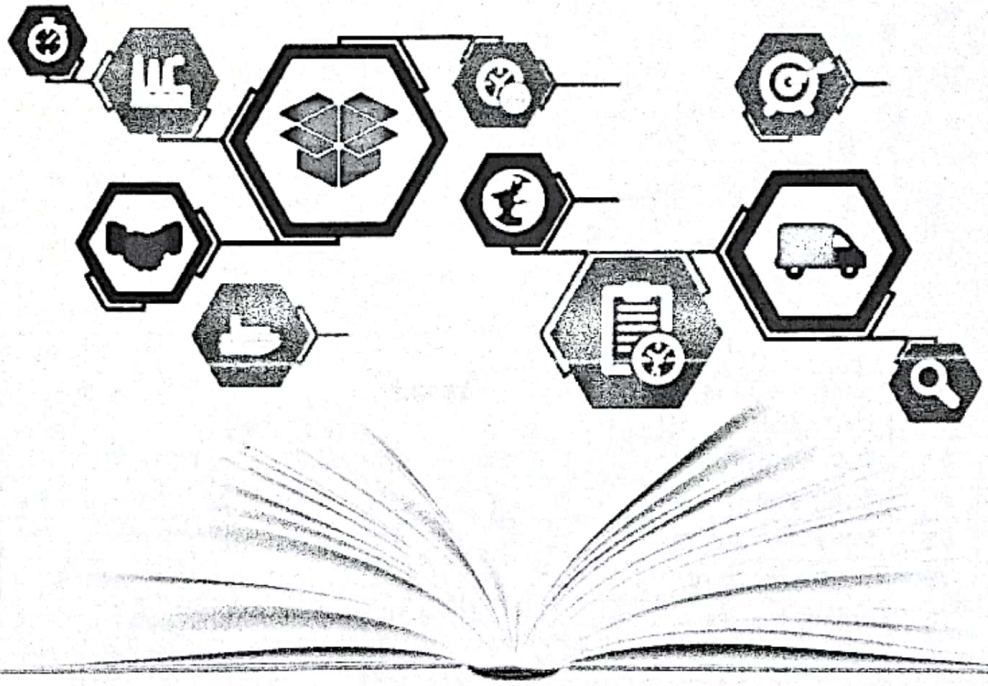

Guest Editor :
Dr. Subhash Nikam
Principal,
Mahatma Gandhi Vidyamandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray Arts,
Science & Commerce College,
Nimgaon, Tal. Malegaon,
Dist. Nashik [M.S.] India

Executive Editor of the issue :
Dr. Arun Patil
Dr. Kalyan Kokane

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Yeola, Dist. Nashik (MS) India.

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

No.	Title of the Paper — Author's Name	Page No.
1	The Impact of Mall, Call and Tall in Teaching of English Language and Literature in Rural Areas — Dr. Umesh Patil	03
2	New and Effective Trends and Techniques Used for Teaching and Learning English Language — Dr. Deepak Chaudhari	06
3	Eco-Cultural Criticism in Literary Study: A General Perspective — Ms. Deepanjali Borse	08
4	A Study of Element of Love and Beauty in the Poems of Dr. Vaibhav Sabnis — Deepak Deore	11
5	Soliloquies and Asides in Mahesh Dattani's Stage Plays — Hemantkumar Patil	14
6	The Role of Recent Trends in Shaping Modern English Literature — Mr. Kamalakar Gaikwad	20
7	Postmodern Sensibilities in K. D. Singh's Ghazals — Prof. Mukund Bhandari	26
8	State Level Seminar Innovative Trends in English Language Teaching — Prof. Sarbjit Cheema	29
9	New Wave in Dalit Literature Reflected in Narendra Jadhav's Outcaste : A Memoir — Dr. Sidhartha Sawant	32
10	Trends in India's Population Growth Challenges & Opportunities — Prakash Kumar	36
11	Business Research — Prof. Uday Teke	40
12	Emerging Trends in English Literature : Post 1950 — Swapnil Alhat	43
13	The Necessity of Incorporating Culture in to a Foreign Language Classroom — Dr. Vrushali Desai	47
14	संस्कृति एवं परपरा : संकल्पना एवं स्वरूप — प्रा.बाबासाहेब शेंडगे	50
15	मुक्तककार डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल — प्रा. राजाराम शेवाळे	56
16	आधुनिक नारी और सामाजिक चुनौतीयाँ — प्रा. आर. एन. वाकळे	59
17	जनसंचार माध्यमो में हिंदी भाषा की स्थिती — प्रा. कैलास बच्छाव	61
18	जागतिकीकरण : मराठी भाषा आणि साहित्य — डॉ. अरुण पाटील	64
19	साहित्यातील एक नवा रुपबंध : अलक — डॉ.प्रमोद आंबेकर	68
20	मराठी साहित्यातील नवे प्रवाह — डॉ. सपना सोनवणे	74
21	भारतातील महिला साक्षमीकरण — ज्योत्स्ना गायकवाड	78
22	इतिहास लेखनाविषयीचा सबाल्टर्न दृष्टीकोन — प्रा.जे.डी.पगार	81
23	भारतीय बँक व्यवसायातील आधुनिक तंत्रज्ञान — देवानंद मंडधरे	84
24	वर्तनवाद : राज्यशास्त्र विषयातील एक नवक्रांती — प्रा. एन.ए. पाटील	90

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 142- Recent Trends in Language, Literature, Social Science & Commerce
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

मुक्तककार डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

सहा.प्रा.शेवाळे राजाराम जी.
श्रीमती पुष्पाताई हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मालेगाव कैंप (नासिक)

आधुनिक हिंदी साहित्य में विशेषकर पद्य में अनेकविध प्रयोग हुये हैं । इनमें कौन कितना सफल हुआ है, यह हम जानते है । काव्य में किये गये प्रयोग समय के साथ चले गये हैं । कुछ महानुभावों के प्रयोग वाकई काबिले तारिफ थे, है और रहेंगे, उनकी वजह से उन काव्यधाराओं को साहित्य इतिहास में जगह मिली हुई है । परिवर्तन कुदरत का नियम है, मानव, जीवन और आनंद के स्त्रोतों को भी यह नियम यथार्थ लागू होता हैं । साहित्य में मानव एवं समाज का चित्रण होता है । आदिकाल से लेकर इन तीनों में बहुत बडे– बडे बदलाव या परिवर्तन आये हैं, ये परिवर्तन नये– नये प्रयोगों के आधारपर होते हैं या आते रहते हैं । मानव, समाज एवं साहित्य में किये गये प्रयोग कितने सकारात्मक, हितावह होते हैं, इस पर उनका कालातित एवं कालजयी प्रभाव डालते है आदि को लेकर उनकी धाराएँ प्रभावित होती रहती हैं । प्रयोगधर्मिता नहीं रही तो साहित्य के विकास में अवरोध निर्माण हो जाते हैं । 'नवोन्मेष' मानव, जीवन, समाज एवं साहित्य का बुनियादी तत्व या विशेषता हैं । इससे मानव, जीवन, समाज एवं साहित्य को गति मिलती है । इसी गति या विकास से इसका सफर स्वस्थता के साथ होता है । ये प्रयोगधर्मिता या परंपरा से हटकर कुछ नयापन लाने की मनिषा ही क्रांति या पथप्रदर्शन की मशाल या मील का पत्थर बन जाता है । डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल जो आधुनिक साहित्य में सूरज के रुप में उभरे है और नये– नये प्रयोगात्मक गतिविधियों के जबर्दस्त प्रशंसक और अपनानेवाले मर्धुन्य साहित्यकार हैं । मैं यह कह सकता हूँ कि परंपरा का अनुयायी बनने से प्रयोग का परचम लहरानेवाला रचनाकार अधिक सराहनीय होता है..... उसके परंपरावादी रचनाकार की तुलना में अपने प्रयोगों द्वारा साहित्य के विकास की बेहतर संभावनाओं को स्थापित करने की चेष्टा की है । मैं फिर दोहराना चाहता हूँ कि परंपरा से प्रयोग बेहतर होता है ।''

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवालजी ने अपनी हर विधाओं की रचनाओं में नयी प्रयोगधर्मिता को यथास्थान अपनाया है और उन्हें बहुत अच्छी सफलता प्राप्त हुई है । इन्होंने अतुकांत कविता के अलावा रुबाई और मुक्तक विशेष हैं । हिंदी में रुबाई और मुक्तकों के नाम लिखा जा रहा था, उसकी शर्तों पर प्रामाणिकता सिद्ध नहीं कर पाते हैं, जो इन रचनाओं के लिए आवश्यक हैं । यही बात मुक्तककों की भी है । ''अच्छे मुक्तक की रचना के लिए कोई विशेष छंद निर्धारित नहीं है । वह किसी भी छंद में लिखा जा सकता हैं, किंतु यह जरुरी है कि चारों पक्तियाँ एक ही छंद में न हो, दो पंक्तियाँ एक छंद में हो और अगली दो किसी अन्य छंद में ये स्थिति स्वीकार्य नहीं । यह भी सही है कि मुक्तक किसी भी विषय को लेकर लिखा जा सकता है, परंतु इस शर्त के साथ कि वह विषय चार पंक्तियों में पूरी तरह मिसटकर आ गया है । मुक्तक पर रुबाईवाली यह बात भी लागू होती है कि कवि अपनी बात का सारा निष्कर्ष अंतिम पंक्ति में देता है । इस तरह पहली तीन पंक्तियाँ भूमिका के रुप में होती है और चौथी पंक्ति बात के अंतिम विषय का वर्णन । मुक्तक की यह शर्त कम ही कवि पूरी कर पा रहे हैं ।

''मुक्तक की पहली दो पंक्तियाँ एक ही तुकांत में भी हो सकती है और नहीं भी । उन्हें इससे मुक्त भी रखा जा सकता है, किंतु दूसरी पंक्ति और अंतिम पंक्ति एक ही तुकांत में होनी आवश्यक हैं । मुक्तक अतुकांत नहीं हो सकता ।''

Scanned with OKEN Scanner

''मुक्तक' शब्द की उत्पत्ति 'मुक्त' शब्द 'मुच' धातु से भूतकाल में प्रयुक्त होनेवाले निष्ठापूर्वक 'क्त' प्रत्यय लगाने से होती है । 'मुक्तक' विशेषण सूचक शब्द हैं, जिनको संज्ञा बनाने के लिए 'कन' प्रत्यय जोडा जाता है और इस प्रकार 'मुक्तक' शब्द बना है, जिसका अर्थ हैं – अपने आप में संपूर्ण तथा अन्य से निरपेक्ष वस्तु । आ. रामचंद्र शुक्ल ने कहा है – ''मुक्तक बिखरी हुई उद्यान से चुना हुआ गुलदस्ता है ।'' डॉ. आदित्य प्रचंडिया लिखते हैं – ''मुक्तक देखने में भले ही छोटे हो अपितु मार्मिक एवं भावपूर्ण और विवेक जागृति के लिए सक्षम होते हैं । साहित्य की विविध विधाओं में मुक्तक एक लोकप्रिय और आकर्षक विधा है । गहन अनुभूतियों को ललित शब्दों में अभिव्यक्त करना विचक्षण कवि की विलक्षण विशेषता है । काव्यकार के मानस– अर्णव में जब चिंतन की वीचियाँ हिलोरें लेने लगती हैं तो अंतस के गहन से मोती, प्रकट होने की वजह से ही आज के गलाहार बन जाते हैं । मुक्तक भाव– प्रणव होने की वजह से ही आज अपनाया जा रहा हैं ।

मुक्तककार डॉ. गिरिराजशरण अग्रवालजी के 'बुँद के अंदर समंदर' नामक मुक्तक संग्रह में उनके चिंतन को बहुत ही मनोरम शब्दों में अंकित कर जीवन निर्माण को प्रवाह के प्रवाहित किया है –

''ढुँढना कोई अगर चाहे दिशाएँ कम नहीं
खिडकियों को खोलकर रखो, हवाएँ कम नहीं
एक ज्ञानी, क्या पते की बात मुझसे कह गया
भावना गर मन में हों, संभावनाएँ कम नहीं''

मुक्तककार ने अपने मुक्तकों में चिंतन– मनन को मंथन को बहुत की सादगी से सुचारु रुप से व्यक्त किया है । प्रतियोगिता की होड में फसा आदमी निराश– हताश होकर जीवनयात्रा में डुबकर चलना छोड देता हैं अर्थात जीवन जीना छोड देता है वह भूल जाता है 'आशा' रखकर अगर वह जीता है तो कई मार्ग, कई काम अर्थात् कई संभावनाएँ रहती है, उन्हें पाने के लिए संघर्षरत रहना आवश्यक हैं यह जीवन का मूलमंत्र हैं ।

मुक्तक आम जनों के लिए प्रेरणादायी, शक्ति एवं मर्यादाओं की पहचान करनेवाले है । कवि इनके द्वारा लोगों को जागृत करते हैं । वह उन्हें अपने जीवन का मुलतत्व कर्तव्य निभाने के, पुरुषार्थ करने के लिए रुढि– परंपरा को तोडकर नयी बातों को अपनाने के लिए कवि अपने कविकर्म को कर्तव्य/ धर्म मानता है –

''यों तो ऐ दुनिया सभी कुछ है तेरे बाजार में
दुःख भी है, आराम भी है, मान भी, अपमान भी
देखना यह है कि किसने किस तरह से तय किया
जिंदगी का रास्ता मुश्किल भी है, आसान भी'

डॉ. अग्रवालजी ने अपने जीवनानुभव को लिखा है । उनका चिंतन एवं साधना और जीवन के सफर में अपने अंतस का अमृत जन– जन को पिलाया है । वह सत्य के पूजारी है और उन्हीं को पाना उनका उद्देश हैं

'समय खुद ही सिखा देता है जीने की कला सबको
बदलती रुत में हर इंसा बदलता सीख लेता है
सफर की ठोकरों से डरनेवालों, यह भी तो सोचो
कि बालक चोट खा– खा के चलना सीख लेता है''

Scanned with OKEN Scanner

मानव जीवन अधिकाधिक संघर्षशील रहे तो उसे जीवन का अर्थ समझने लगता है और वह उसका आनंद लेने लगता है । बशर्ते वह कम मेहनत में सबकुछ पाना चाहता है । विशिष्ट कामों को ही समझता है, कोई छोटा काम वह करना नहीं चाहता है । इसीलिए वह टूटकर बिखर जाता है, जिससे उसका हौसला, उम्मीद खोकर जीवन से भागना चाहता है, उन्हे दोस्त कहकर कवि सचेत करते हैं –

''हर दिशा से तीर बरसे, घाव भी लगते रहे
जिंदगी भर दिल मेरा आघात से लडता रहा
दोस्त! कस– बल की नही, यह हौसले की बात है
कितना छोटा था दिया, पर रात से लडता रहा ''

आजकल मानव ने विश्वास को खो दिया है, उन्हें अपने आप पर और ना अपनों पर विश्वास है, जिससे उन्होंने अपनों को और अपनत्व को संबंधों में खाई निर्माण कर उसे दिनोंदिन बढाता जा रहा है, उन्हें कवि कहते हैं–

'अपनत्व में शिकवा, ये गिला दोष नहीं
हो प्या तो फिर रोष, निरा दोष नहीं
यह बात गिरह बाँध कि संबंधों में
विश्वास के संकट से बडा दोष नहीं ''

जीवन में दु:ख दर्द, घाव, आघात, ठोकरें, कडी मेहनत एवं संघर्ष करने से सुख, समाधान एवं आनंद की प्राप्ति होती है । इसीलिए दु:ख को अपना साथी कहा गया है, जिससे बिना सुख का अनुभव खुशी नहीं देता । जब संघर्ष हो तो फौलाद बनना, सुख आया तो मोम जैसा आचरण कर फुल की तरह अपने दुख– दर्द या क्रोध की तलवार को म्यान करना चाहिए । समय किस अवसर पर क्या मांगेगा पता नहीं । इसीलिए मानव ने हर समय तैयार रहना चाहिए –

आचरण में मोम की नर्मी हो, फौलाद भी
फूल बनकर म्यान में तलवार रहना चाहिए
कब समय की मांग क्या हो, यह पता चलता नहीं
आदमी को हर घडी तैयार रहना चाहिए ।''

हिंदी और साहित्य सेवी डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल ने अपने मुक्तकों में अपूर्व कलात्मकता से युक्त भावों, समाज– चेतना को गई अर्थवत्ता से भर दिया है । उनके मुक्तकों में मिट्टी की सोंधी महक एवं जनसाधारण तथा सर्वहारा के पसीनों के सिकन के तारोगणों को पढते– विश्लेषित करते देखा जा सकता है । मानव, जीवन और समाज तथा उनकी अंतरंगता को विचारों के अंगारे जलाकर फूल से शब्दों में अंकित कर मधुर सुगंध से जीवन को सुगंधित कर अपवित्रता को मिटाकर जीवन पुनित– पावन भावना जगाना मुक्तककार कार उद्देश्य है ।

मुक्तककार ने मुक्तकों को जीवनानुभूति के खजाने को प्रदान किया है । उन्हे, उदारता, संवेदनशीलता, मानवता के स्वर, नवनिर्मिती की पुकार आदि का मुक्तकों में समाहित किया है । समस्त मुक्तक भाव, भाषा, स्पष्ट छंद की कसौटियों में खरे उतरे हुए हैं । अंतत: यह स्पष्ट होता है कि हिंदी सेवी, साहित्य तपस्वी शब्द साधक, समाजसेवी डॉ. गिरिराजशरण अग्रवालजी एक सफल मुक्तककार के रुप में प्रतिष्ठित हैं ।

संदर्भग्रंथ :

१. गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली, काव्य समग्र – संपा. डॉ. कमलकिशोर गोयनका. डॉ. मीना अग्रवाल
२. सफर साठ साल – संपा. डॉ. अजय जनमेजय
३. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य – डॉ. हरिशकुमार सिंह.

Scanned with OKEN Scanner